स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड की
पीएच.डी. हिंदी उपाधी हेतू प्रस्तुत शोधविषय की संक्षिप्त रुपरेखा

विषय : प्रेमचंद और अण्णाभाऊ साठे के प्रातिनिधिक उपन्यासों में स्त्री चित्रण : एक अध्ययन

शोध - छात्रा

विजया सोपानराव उफाडे

एम.ए., एम.फील, एम.एड्.

पीपल्स महाविद्यालय, नांदेड

शोध - निर्देशक

डॉ.ज्ञानेश्वर गाडे

योगानंद स्वामी महाविद्यालय, वसमत

अनुसंधान केन्द्र

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ, नांदेड

सन २०१९ - २०२०

'प्रेमचंद और अण्णाभाऊ साठे के प्रातिनिधिक उपन्यासों में स्त्री चित्रण : एक अध्ययन'

प्रस्तावना :

उपन्यास मानव जीवन का समग्र रुप से चित्रण करनेवाली सशक्त विधा है। उपन्यास में मानव जीवन की घटनाओं का अंकन किया जाता हैं। स्त्री तथा पुरुष मानव जीवन के दो अंग माने जाते हैं। समाज में दोनो का समान महत्व हैं। अनेक साहित्यकारो ने अपनी साहित्यकृती में नारी के विभिन्न पहलुओ को दर्शाया। कभी माँ, कभी पत्नी, कभी बहन इन रुपों में वह सामने आई हैं। नारी के इस रुप का चित्रण न केवल भारतीय भाषा में ही नहीं तो विश्व की सभी भाषा साहित्य में हुआ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय 'प्रेमचंद और अण्णाभाऊ साठे के प्रातिनिधिक उपन्यासों में स्त्री चित्रण एक अध्ययन' हैं। तुलनात्मक शोध हिंदी में सर्व प्रथम देव और बिहारी पर किया गया। एक वस्तु को दुसरी वस्तु के साथ रखकर परखने से तुलना का जन्म होता है। तुलना दो समान वस्तुओं में की जाती हैं। साहित्यीक तुलनात्मक शोध सामान्य रुप से दो रचनाओं में, दो रचनाकारो में की जाती हैं।

मैंने यहाँ दो समानधर्मी उपन्यासकारो के स्त्री पात्रो की तुलना करने का प्रयास किया हैं। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद और मराठी साहित्य में अण्णाभाऊ साठे मुझे बहु पसंद है। उन दोनो का उपन्यास साहित्य व्यापक होने के कारण मैंने उनके उपन्यासों में से प्रातिनिधीक रुप में क्रमशः प्रेमाश्रम, सेवासदन, निर्मला, गबन, गोदान और अण्णाभाऊ साठे के चित्रा, वैजयंता, कुरुप, तारा, आवडी, ये उपन्यास तुलनात्मक अध्ययन के लिए चयन किए मुझे शोध-निर्देशक डॉ.प्रा.ज्ञानेश्वर गाडे जी का अमूल्य योगदान मिला।

विषय चयन का महत्त्व :

१८ वी सदी के उत्तरार्ध में हिंदी के उपन्यास की शुरुआत हुई। हिंदी का उपन्यास साहित्य आधुनीक युग की देन हैं। लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' यह हिंदी का पहला उपन्यास माना जाता हैं। भले ही उपन्यास की शुरुआत प्रेमचंद के पहले युग में हुई किंतु उनके सिवाय हिंदी उपन्यास अधूरा हैं।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों से समाज के सर्वहारा घटकों की समस्याओं का अंकन किया हैं। उन्होंने जातियता, वर्णभेद, स्त्री पुरुष भेद पर कडा प्रहार किया हैं।

जैसे उपन्यासों से उन्होंने दलित स्त्री के भीतर की उमडती चीख को शब्दबद्ध किया हैं। उनका लेखन हृदय की गहराइयों में प्रविष्ठ होकर नए, अछुते और असभ्य भाव रत्नों को तलाश करने की कोशीश करता हैं। प्रेमचंद्रजी के उपन्यास में समाज में दलित स्त्रियों की क्या स्थिति थी? यह भी दर्शाया हैं।

उन्नसवी सदी में दलित स्त्रियों को किन परिस्थितीयों का सामना करना पडता था? यह जानने के लिए प्रेमचंद के उपन्यासों का अध्ययन महत्त्वपूर्ण समझा।

जिस प्रकार प्रेमचंद जी हिंदी उपन्यास साहित्य में ११ उपन्यास लिखे उसमे महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। ठिक उसी प्रकार मराठी साहित्य में अण्णाभाऊ साठे महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने तीस कादंबरी लिखी हैं। दोन्हों भी साहित्यकारों के उपन्यास पढ़ना एक रोचक अवसर हैं। प्रेमचंद जी की तरह ही अण्णाभाऊ साठे जी ने दलित स्त्रियों की वेदनाओं का प्रस्फूटन किया। उन्हें व्यवस्था के विरुध्द प्रतिकार करने की प्रेरणा दी।इन दोन विद्वानों के उपन्यासों में भाषा का ही भेद हैं, किंतु स्त्रियों की समस्याओं में समता दिखाई देती है।

हिंदी तथा मराठी के इन दो उपन्यासकारों के उपन्यासों का अध्ययन करने का कूतूहल मेरे मन में निर्माण हुआ, इसीलिए मैंने 'प्रेमचंद और अण्णाभाऊ साठे के प्रातिनिधीक उपन्यासों में स्त्री चित्रण : एक अध्ययन' इस विषय का चयन किया। विषय चयन में शोध निर्देशक डॉ.प्रा.ज्ञानेश्वर गाडे जी का अमूल्य योगदान रहा।

शोध विषय के उद्देश :

१. प्रेमचंद जी और अण्णाभाऊ साठे इनके व्यक्तित्व और विभिन्न पहलुओं को रेखांकित करना ।

२. उपन्यासों में स्थित समस्याओं को स्पष्ट करना ।

३. इन दोनों उपन्यासकारों की प्रतिभा को उद्‌घाटित करना ।

४. इनके उपन्यासों के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करना ।

५.	उपन्यासों में स्थित दलित स्त्रियों के समस्याओं को जानना ।

६.	उपन्यासों का शैलीगत अध्ययन करना ।

७.	उपन्यासों में अंकित जातीयता को स्पष्ट करना ।

८.	स्त्रियों के अन्याय के प्रति उपन्यासकारों के दृष्टिकोन को समझना ।

९.	एक दलित स्त्री को अन्य स्त्रियों के द्वारा किये गये भेदभाव को स्पष्ट करना ।

१०.	दलित बस्ती के जीवन का यथार्थ चित्रण करना ।

११.	सुवर्णोद्वारा दलितो पर किए जानेवाले अत्याचार को स्पष्ट करना ।

१२.	बालविवाह इस विधि का अध्ययन करना ।

१३.	समाज में स्थित अंधश्रध्दा को दर्शाना ।

प्रथम अध्याय

१.१ प्रेमचंद जी का व्यक्तित्व :

प्रेमचंद जी का पुरा नाम मुंशी प्रेमचंद हैं। हिंदी साहित्य के शिरोमणि प्रेमचंद जी का अन्य नाम नवाबराय हैं। उनका जन्म ३१ जुलाई १८८० में लमही नामक गाँव में हुआ जो उत्तर प्रदेश के वाराणसी में स्थित हैं। इनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम अजायब लाल हैं। प्रेमचंद जी प्रसिध्द उपन्यासकार थे।

हिंदी साहित्य जगत में मुंशी प्रेमचंद जी का स्थान अन्य कोई भी नहीं ले सकता। इन्होंने ३०० से भी अधिक कहानियाँ लिखी। वे एक अमर कथाकार हैं। भारतीय कथा साहित्य की उपन्यास व कहानी विधा को सही दिशा देने के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

'प्रेमचंद' उनका साहित्यिक नाम था और बहुत वर्षो बाद उन्होने यह नाम अपनाया था उनका वास्तविक नाम 'धनपत राय' था। जब उन्होंने सरकारी सेवा करते हुए कहानी लिखना आरंभ किया तब उन्होंने नवाबराय नाम अपनाया। वे सादे एवं सरल जीवन के मालिक थे। उनके जीवन में विषमताओं और कटुताओं से वह लगातार खेलते रहे। ८ अक्टुबर १९३६ में इनकी मृत्यु वाराणसी में हुई।

१.२ प्रेमचंद जी का कृतित्व :

प्रेमचंद जी ने साहित्य की हर विधाओं में रचना की हैं। वे कहानीकार के अलावा आलोचक, नाटककार, निबंधकार, संपादक और अनुवादक भी थे। उनका एक संग्रह भी 'कुछ विचार' के नाम से प्रकाशित हो चुका हैं। उनके दो नाटक संग्राम और कर्बला और एक छोटा नाटक 'प्रेम की वेदी' है। उनकी कहानियाँ ३०० से भी अधिक हैं। कहानियों के कुछ संग्रहो के अलावा उनकी सभी कहानियाँ मानसरोवर (आठ भाग) में एक साथ संकलित हो गयी हैं। इनका पहला महत्वपूर्ण उपन्यास सेवासदन १९१८ में प्रकाशित किया गया। मुंशी जी के साथ मौलिक उपन्यास माने जाते हैं - प्रेमाश्रम, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान उनका अपूर्ण उपन्यास मंगलसूत्र हैं। प्रेमचंद जी पर मार्क्स एवं आंबेडकर जी के विचारधारा का गहरा प्रभाव था।

१.३ अण्णाभाऊ साठे का व्यक्तित्व :

अण्णाभाऊ साठे एक महान समाजसुधारक एवं साहित्यकार थे, इनका जन्म दलित अस्पृश्य के मांग जाति में हुआ था। इनका जन्म १ अगस्त १९२० में वाटेगांव जिला सांगली में हुआ। उनके पिता का नाम भाऊराव साठे एवं माता का नाम वालूबाई साठे था। इन्हे देढ दिन ही पाठशाला जाने का अवसर मिला सवर्णो के शोषण के कारण इन्होंने पाठशाला जाना बंद किया। इनके दो विवाह हुए पहली पत्नी का नाम कोंढाबाई साठे और दुसरी पत्नी का नाम जयवंता साठे था। फकीरा इनका महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता हैं। इनका अन्य नाम साहित्य सम्राट लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे ये हैं। इनके मृत्यू १८ जुलाई १९६९ बंबई में हुई।

१.४ अण्णाभाऊ साठे जी का कृतित्व :

साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित अण्णाभाऊ साठे जी ने कामगार एवं दलितों के जीवन संघर्ष को अपने कथा एवं उपन्यासों से व्यक्त किया है। साहित्य के सम्राट अण्णाभाऊ साठे जी ने तेरह कथासंग्रह लिखे हैं। इन्होंने (इनामदार, पेंग्याचं लगीन, सुलतान) तीन नाटक रचे हैं। अकलेची गोष्ट, खापऱ्या चोर जैसे चौदह लोकनाट्य का निर्माण किया, आग, अहंकार, जैसे (३५) पैंतीस उपन्यास लिखे हैं। उन्होंने भारतीय साम्यवाद को पहला स्थान दिया ।

द्वितीय अध्याय

साहित्य में स्त्री चित्रण की परम्परा

हिंदी साहित्य में आदिकाल से स्त्री चित्रण परम्परा दृष्टिगोचर होती हैं। किंतु उसे केवल भोगवस्तू के रुप में दिखाया गया। उसके श्रृंगारिक रुप का वर्णन आदिकालिन कवियों ने किया। भक्तिकाल में स्त्री के दो रुपों का वर्णन किया एक जो माया के रुप में दूसरी जो पतिव्रता के रुप में, कबिर जी ने प्रतिव्रता नारी का सम्मान किया।

स्त्री की समस्याओं को अंकन करने का श्रेय छायावाद को जाता है। प्रेमचंद से लेकर मराठी के भी अनेक पुरुष लेखको ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया। समाज के दो पहलू स्त्री पुरुष एक-दुसरे के पुरक है। किसी एक के अभाव में दुसरे का अस्तित्व शुन्य हैं। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने बराबर के समानता से वंचित रखा।

आदिकाल से ही नारी की दशा दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्री की दशाओं पर अनेक साहित्यकारों ने चिंता व्यक्त कि और यथासम्भव दूर करने का भी प्रयास किया। आधुनिक काल में जैनेंद्र, प्रेमचंद्र जी जैसे लेखकों ने स्त्री का चरित्र-चित्रण किया हैं। कभी उसे शोषित, शापित तो कभी व्यवस्था के प्रति क्रोध करती हुई दर्शाया गया। मराठी साहित्य में अण्णाभाऊ साठे जैसे महान लेखक ने स्त्री के अनेक पहलू को दिखाया है। भारतेन्दु, कालखंड से लेकर आज तक के सभी साहित्यकारों ने अपने साहित्य में कुछ ऐसे नारी पात्रों की योजना की है जो नारी के शोषण, उन पर होनेवाले अत्याचार विभिन्न समस्याएँ उनसे मूक्ति, अपने स्व की खोज आदि व्यक्त करने में सक्षम है।

तृतीय अध्याय

३.१ प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री चित्रण :

३.१.१ देहाती स्त्री जीवन पर प्रकाश -

गोदान में धनिया एक देहाती स्त्री हैं जो सरल स्वभाव की हैं। शहर के मुकाबले में देहाती स्त्रियों को किस प्रकार अंधश्रध्दाओं का रुढियों का सामना करना पडता था इसका चित्रण प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में किया हैं। धनिया के माध्यम से प्रेमचंद जी ने देहाती स्त्री जीवन पर प्रकाश डाला हैं।

३.१.२ स्त्री का क्रांतिकारी रुप -

प्रेमचंद के नारी पात्रों की यह विशेषता हैं की वे भारतीय हैं। गबन में जालपा इस नारी पात्र को देखकर आश्चर्य होता हैं, एक और उसका पति को सर्वस्व मानने वाला रुप तो दुसरी और क्रांतिकारी होना। वह सबल चरित्र का ऐसा उदाहरण हैं जो बिना झगडे तत्परता और बहादुरी से जिंदगी की जद्दोजहद से जुझती हैं। अपनी समझ से जो भी रास्ता अख्तियार करती है उस पर अडिग रहती हैं। रीतिरिवाज अंधविश्वास और संस्कारों को नकारते हुये ज्ञान के उदात्त रुप को आत्मसात करती हैं। जालपा के भीतर का यह बदलाव क्रांतिकारी महिला का द्योतक हैं।

३.१.३ संघर्षरत एवं मेहनतकश नारी -

प्रेमचंद के उपन्यास में स्त्रियाँ अपने जीवन को सुखी, स्वतंत्र व संपन्न बनाने के कार्य में जूटी हैं। गोदान में धनिया एक सशक्त रुप में सामने आती हैं। यथासंभव परिस्थिति वश विरोध और विद्रोह का साहस रखती हैं। वहीं झुनिया प्रेम करके शादी का निर्णय स्वयं ही करती हैं। यहाँ वह पुरुष से भी ज्यादा सशक्त हैं। पति में हिम्मत नहीं होने के कारण वह सास-ससूर से अपने रिश्ते के बारे में स्वयं ही बताती हैं।

३.१.४ विधवा स्त्री की समस्या -

प्रेमचंद युगीन समाज में नारी पुरुषों के अधीन रही। उस दौर में पति के संपत्ति पर पत्नि का हक न था। पति के मृत्यु के बाद पत्नियाँ संपत्ति से बेदखल हो जाया करती थी। प्रेमचंद जी ने विधवा स्त्री की समस्या को अपने साहित्य में बार-बार उभारी हैं। यह समाज का शाश्वत सत्य हैं जो हर वर्ग के स्त्री के सम्मुख उपस्थित हैं। वैधक्य के कई उदाहरण उनके उपन्यास में हैं। जैसे 'गबन में विधवा रतन कहती हैं - न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था कि पति के मारते ही हिन्दू नारी इस प्रकार स्वत्व - वंचिता हो जाती हैं।'

३.१.५ वेश्या स्त्री की मनोवृत्ति का चित्रण -

प्रेमचंद जी यह मानते थे की स्त्री को गर सच्चा प्रेम मिल जाय तो उसमें सुधार आ जाती हैं। गबन की वेश्या जोहरा और गोदान की तितलीनुमा सोसायटी लेडी मिस मालती

ऐसी ही स्त्रियाँ हैं। वैश्या वृत्ति की समस्या पर प्रेमचंद की भावनाएँ कोम रही हैं। उनकी अवधारणा रही हैं, इस तरह की महिलाएँ समाज द्वारा ठुकराई हुई होती हैं। उन्हे अच्छी जिंदगी का मौका मिले तो वे वेश्यावृत्ति करना छोड देंगी।

३.१.६ स्त्री दहेज प्रथा का शिकार -

प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं में नारी पात्रों को किस तरह दहेज - प्रथा का शिकार होना पडता था यह दर्शाया हैं। निर्मला द्वारा नारी का वह वर्ग सामने आता हैं जो दहेज का बलि हो चुकी थी। प्रेमचंद जी ने नारी की स्थिती सुधारने के लिए उसे आत्मनिर्भर होना जरुरी माना।

३.१.७ अनमेल - विवाह की समस्या -

प्रेमचंद जी ने समाज के सखोल विचारों पर कडा प्रहार किया हैं। उन्होंने निर्मला इस उपन्यास से इस बात को मुखरित किया की उस जमाने में खानदान का अच्छा होना बहुत मायने रखता था। स्त्री का विवाह योग्य वर को देखकर नहीं तो उसकी खानदान देखकर किया जाता था। इन्ही विचारों का शिकार निर्मला बनती हैं जब उसका विवाह १५ वर्ष की आयु में ४५ वर्ष के तोता राम के साथ होता हैं, ना निर्मला की जिंदगी सुधरती सँवरती हैं, ना तोता राम के परिवार को तबाह होने से कोई रोक पाता हैं।

३.१.८ स्त्री के विभिन्न रुपों का अंकन -

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी के ढेरों रुप हमने देखे जिससे समाज को देखने, परखने और जॉचने का मौका मिला । प्रेमिका, विधवा, माता, परिणीता, मेहनतकश वेश्या और समाजसेविका आदि कई रुपों में उनके नारी पात्र अमिट छाप छोडते हैं।

३.१.९ स्त्री त्याग और वात्सल्य की मूर्ति -

प्रेमचंद जी स्त्रियों को त्याग और वात्सल्य की मूर्ति मानते थे। वे स्त्री को उसके गुणों के कारण पुरुष से भी श्रेष्ठ मानते थे। स्त्रियों का वे बेहद सम्मान करते थे। उसके नारी पात्र सिर्फ कल्पना मात्र न होकर भारतीय समाज का प्रतिनिधीत्व करते हैं।

३.१.१० नारी दुर्दशा का चित्रण -

स्त्री का आर्थिक एवं शैक्षणिक परतंत्रता ही उसकी दुर्दशा का कारण बनती चली आई हैं। आज के हिंदी साहित्य में जितनी मुखर चर्चा इस विषय पर हो रही हैं बीसवीं सदी के प्रारंभिक चरण में कथासम्राट प्रेमचंद ने इससे भी ज्यादा मुखर की थी। दहेज प्रथा, बेमेल विवाह, वेश्यागमन आदि सामाजिक विकृतियों से नारी की जो दुर्दशा हुई थी उसका चित्रण प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में किया हैं। सेवासदन में गगंगाजली अपने पति को कुमार्ग पर चलने के कारण त्रस्त हैं। निर्मला दहेज प्रथा और बेमेल विवाह का शिकार बन दर्द के शिकंजे में जखड गई हैं। स्त्री के विभिन्न दुर्दशा का कारण प्रेमचंद जी समाज के रुढियों को मानते हैं।

चतुर्थ अध्याय

४.१ अण्णाभाऊ साठे के उपन्यासों में स्त्री चित्रण :

४.१.१ कला के क्षेत्र में स्त्री शोषण -

अण्णाभाऊ साठे जी स्वयं एक कलाकार होने के नाते वे स्त्री कलाकारों का आदर करते थे। उनके युग में लोकनाट्य का जनमानस में अधिक प्रभाव था। उस क्षेत्र में पुरुषों के साथ स्त्री कलाकार भी हुआ करते थे। लोगों का स्त्री कलाकारों के प्रति देखने की दृष्टि बुरी थी। वे हर स्त्री कलाकार को बुरी नजर से देखते थे। ऐसे ही दृष्टि का शिकार वैजयंता बनती हैं। इस पात्र के जरिए अण्णाभाऊ जी ने समाज स्त्री कलाकारों की इन समस्याओं का दर्शाया हैं।

४.१.२ स्त्री पुरुषप्रधान संस्कृति का शिकार -

सदियों से स्त्री को समाज ने निम्न दर्जा दिया हैं। आज भी स्त्रियों को पुरुषों से निम्न ही स्थान दिया जाता हैं। अण्णाभाऊ साठे जी ने पुरुषों की इस विचारधारा पर कटुता से प्रकार किया हैं। स्त्री चाहे सवर्ण समाज की हो या दलित समाज की पतिव्रता हो या वेश्या उन सभी पर समाज का अधिपत्य रहा हैं। कुलीन परिवार में जन्मी आवडी ने पुरुषवादी संस्कृति का विरोध कर अपने अधिकार के लिए लडती हैं। परिवार की इज्जत के लिए स्वयं अन्याय का सामना करना उसे पसंद नहीं है।

४.१.३ स्त्री जीवन का वास्तवादी चित्रण -

आरंभ से स्त्री शोषण का शिकार होती हुई दिखाई देती हैं। अण्णाभाऊ साठे जी ने स्त्रियोंकी समस्याओं का वास्तववादी चित्रण किया हैं। चित्रा इस नायिकाप्रधान उपन्यास को लिखने के बाद लेख ने कहा की मैं जो भी लिखता हूँ वे आस-पास की घटित घटनाएँ होती हैं। चित्रा, वैजयंता, तारा, आवडी इन उपन्यासों को पढ़ने के बाद सच में यह लगता हैं की ये केवल उपन्यास न होकर हमारे आस-पास की स्त्रियों की वेदनाएँ हैं, जिन्हे हम रोज अनुभव करते हैं।

४.१.४ मजदूर स्त्री का चित्रण -

समाज में स्त्रियों के दो भेद हैं सधन स्त्री एवं निर्धन स्त्री। अण्णाभाऊ साठे जी ने अपने उपन्यासों में मजदूर स्त्रियों का वर्णन बेबाकी से किया है। किस प्रकार उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडता हैं। चित्रा इस उपन्यास में सखुबाई इस पात्र के जरिए लेखक ने मजदूर स्त्री की समस्याओं का अंकन किया हैं।

सखुबाई के मजदुरी करने पर भी वह अपनी बेटियों को ठीक से अनाज और कपडा भी नहीं दे सकती इसिलिए वह परिस्थिति के सामने विवश होती है।

४.१.५ वेश्यावृत्ति की समस्या का चित्रण -

वेश्यावृत्ति इस विषय पर अनेक लेखकों में अपनी कलम चलाई अण्णाभाऊ साठे जी ने वेश्या व्यवसाय करने वाली स्त्रियों के जीवन को उजागर किया। वे उनकी इस स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हैं। वैश्या स्वयं उस राह पर जाना नहीं चाहती किंतु समाज के लोग उसे वहाँ जाने पर विवश कर देते हैं। चित्रा इस उपन्यास में सोना नाम का पात्र अपने मामा द्वारा इस व्यवसाय में ढकेली जाती हैं। उसे वापस आने के लिए कोई भी रास्ता नहीं मिलता।

४.१.६ वासना का शिकार स्त्री -

अण्णाभाऊ साठे जी ने पुरुषी वासना का शिकार बनी स्त्रियों का वर्णन अपने उपन्यासों में किया। पुरुष स्त्री को अपना गुलाम मानते हैं। सोना, चित्रा, रेणु, ये पात्र किस प्रकार पुरुषों की कामुक वृत्ति का शिकार बनी हैं यह बताया हैं।

४.१.७ नारी का संघर्ष -

स्त्रियों को जीवनयापन करते समय अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडता हैं। अण्णाभाऊ साठे जी ने तारा, चित्रा, जैसे पात्रों से नारी जीवन में कितना संघर्ष होता हैं, यह बताया। समाज की रुढियों, बंधनों के कारण स्त्रियों का अनेक संकटो का सामना करना पडता हैं। नारी का जीवन संघर्षशील हैं।

पंचम अध्याय

५.१ प्रेमचंद तथा अण्णाभाऊ साठे के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन

५.१.१ सामाजिकता

५.१.२ जातियता के प्रति दृष्टिकोण

५.१.३ स्त्री संबंधी दृष्टिकोण

५.१.४ परिवार संस्था

५.१.५ किसानों के प्रति सहृदयता का भाव

५.१.६ मजदूरों के प्रति सहानुभूति का भाव

५.१.७ अंधश्रद्धा एवं रुढियों के प्रति दृष्टिकोण

५.१.८ मार्क्सवाद का प्रभाव

उपसंहार

'प्रेमचंद और अण्णाभाऊ साठे के प्रातिनिधीक उपन्यासों में स्त्री - चित्रण : एक अध्ययन' इस विषय का विवेचन करते समय इन उपन्यासकारों के उपन्यासों में से स्त्री की नैतिक, सामाजिक, आर्थिक संघर्ष उभरकर सामने आया हैं। प्रेमचंद जी हिंदी साहित्य के शिरोमणी है। वे उच्चकोटि के उपन्यासकार भी माने जाते है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलु तथा उनकी वास्तविकता को बेहिचक सहजता से व्यक्त किया।

अण्णाभाऊ साठे जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री के अन्याय के प्रति दृष्टिकोन दर्शाया हैं। वे अपनी नायिकाओं को अन्याय के प्रति लढते हुए दिखाते हैं। वे अपना अधिकार प्राप्त करने के लिए सक्षम हैं।

इस तरह दोनो उपन्यासकारों की भाषा भिन्न होने के बावजुद भी उनमे आधारभूत एकता हैं। इन बिंदुओं के तुलनात्मक अध्ययन से मराठी शोध और आलोचना का हिंदी शोध और आलोचना के साथ परिचय प्राप्त किया जा सकता हैं।

संदर्भग्रंथ सूचि

१. समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचंद - डॉ.महेश भटनागर

२. हिंदी उपन्यास ; सिध्दांत और समीक्षा - डॉ.रामकुमार

३. आधुनिक हिंदी गद्द साहित्य - डॉ. हरदयाल

४. गोदान-एक नव्य परिबोध - त्रिलोकीनाथ खन्ना

५. प्रमुख कवित और परिबोध - डॉ.विजयश्री शरण

६. नारी जीवन की कहानियाँ - प्रेमचंद

७. प्रेमचंद - प्रताप नारायण टंडन

८. कर्मभूमि - प्रेमचंद

९. प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यासों मे प्रेम की आवधारणा और प्रेम

१०. साहित्य रत्न लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे निवडक वाङ्मय खंड-१, खंड-२ (महाराष्ट्र शासन)

११. लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे निवडक वाङ्मय - संपादक मंडळ अर्जुन डांगळे नीला उपाध्ये, वसुंधरा पेडसे, नाईक, डॉ.सुभाष सावरकर

१२. दलित साहित्य और समसामयिक सन्दर्भ - डॉ.श्रवणकुमार मीणा

१३. अण्णाभाऊ साठे व समाज परिवर्तन - प्रा.विठ्ठल भंडारे

१४. प्रबोधनाचा दीपस्तंभ अण्णाभाऊ साठे - डॉ.विठ्ठल भंडारे

१५. दलित साहित्य : रचना और विचार - डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

१६. दलित चिन्तन का विकास - डॉ.धर्मवीर

शोध - छात्रा

विजया सोपानराव उफाडे

एम.ए., एम.फील, एम.एड्.

पीपल्स महाविद्यालय, नांदेड

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ.ज्ञानेश्वर गाडे

योगानंद स्वामी महाविद्यालय, वसमत